International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

# यशपाल की कहानियों में स्त्री–पुरुष संबंधों की यथार्थवादी व्याख्या

सुनीता कुमारी
हिन्दी विभाग,
Email : sunitadeswal10@gmail.com
गाँव–लाढ़ौत, रोहतक (हरियाणा), 124001

**शोध सार :** *स्त्री–पुरुष संबंध सामाजिक संगठन की रीढ़ हैं। यशपाल की कहानियों में प्रेम तथा काम–संबंधों को लेकर बहुत कुछ लिखा गया है। मार्क्सवाद राजनैतिक विचारधारा के मुख्य स्वर के साथ–साथ यशपाल की कहानियों में प्रेम, काम, विवाह तथा नारी की स्थिति विषयक चिन्तन की प्रमुखता से मिलता है। प्रेम को यशपाल पूर्णतया शारीरिक भौतिक प्रक्रिया स्वीकार करते हैं। शारीरिक सम्पर्क से कामेन्द्रियों प्रभावित होती हैं, उनसे ज्ञानेन्द्रियां और ज्ञानेन्द्रियों से मन अथवा हृदय प्रभावित होता है। जब हम प्रेम को हार्दिक अथवा मानसिक प्रक्रिया स्वीकार करते हैं तो भी हम उसके भौतिक अस्तित्व को स्वीकृति देते हैं, ––प्रेम की शक्ति जीवन में तृप्ति की चाह है और कामना उसका रूप है। यह प्रेम और जीवन की गति है।''[1]*

**मुख्य–शब्द : शिक्षा, राजनैतिक विचारधारा ,प्रेम, काम, विवाह तथा नारी की स्थिति विषयक।**

**शोध–प्रविधिः** इस शोध–पत्र के लिए शोध सामग्री अधिकांश रूप में द्वितीयक स्रोतों से ग्रहण की गई हैं। इसमें ऐतिहासिक विश्लेषण व वर्णनात्मक दृष्टिकोण के साथ–साथ शोधकर्त्ता ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों को भी स्थान दिया है। शोध सामग्री प्रसिद्ध पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं व समाचार पत्रों से प्राप्त की गई हैं।

स्त्री–पुरुष एक–दूसरे से प्रेम क्यों करते हैं, इस प्रश्न का उत्तर यशपाल ने यथार्थवादी, भौतिकवादी दृष्टि से ही सर्वत्र दिया है – ''प्रेम सृष्टि की परिचाक शक्ति है। वह जीवन की गति है और प्रेरणा है – प्रेम गतिमान और निर्बाध भावना है। उस पर सीमा और बन्धन लगाना, उसे निस्सत्त्व और निर्बल कर देना है। प्रेम जीवन के उपवन की मुख्य पवन है। विवाह की चारदीवारी खड़ी करके प्रेम पर रूकावटें लगाना उसे निस्सार कर देना है।''[2] उनका मानना है कि प्रेम विवाह के बाद समाप्त हो जाता है। अर्थात् प्रेम विवाह से पूर्व ही होता है बाद में तो केवल पति–पत्नी समझौते के साथ जीते हुए जिन्दगी की गाड़ी चलाते हैं। जिस तरह से उन्मुक्त जल–प्रवाह को किसी पोखर में बन्द कर देने से वह कान्तिहीन अथवा उसकी चंचलता खो जाती है उसी प्रकार विवाह का बंधन प्रेम को नष्ट कर देता है।

यशपाल, प्रेम में परस्पर समझ–बूझ, आवश्यकता एवं आकर्षण को भी मूल वस्तु समझते हैं। स्त्री–पुरुष संबंधों में किसी प्रकार के प्रलोभन, दबाव अथ्वा स्वार्थ को, अनैतिक एवं अनुचित मानते हैं। जैसे 'नमक हलाल' कहानी में राजा साहब नसिया से प्रेम नहीं करते बस उसे प्रेम का नाटक करे हुए अपनी वासना को पूरा करना चाहते हैं। वे अपने नौकर को उसे लाने के लिए कहते हैं। वह जसिया को लाने जाता है तो वह मना कर देती है। इस पर नौकर राजा साहब को कहता है –''अरे हुजूर, इतना समझाया.. अमा तुम टके–टके बिकती हो, तुम्हें मिजाज किस बात का? सरकार ने अशरफी दिला दी सो दिमाग बिगड़ गया। कहते रातभर ठहरो यहाँ। तब सुबह पसेरी भर अनाज दिल देते।''[3]

उस अवस्था में भी बदहवास नसिया ने गाली का उत्तर गाली से दिया, छूने वाले का कलेजा चीर, खून पी जाने की धमकी दी। राजा साहब के क्रोध की निस्तेज होती अग्नि पर पट्रोल पड़ गया। – ''अभी

इस... हरामजादी को हमारे सामने कुत्तों से...। बुलाओ साले जगन को! रहमत को भी बुलाओ। अभी यही हमारे सामने.. ऐसे मिजाज है।... वे चिल्लाकर दांत किटकिटाने लगे।''[4]

यशपाल प्रेम को भी भौतिक पदार्थ स्वीकार करते हैं, क्योंकि उनके अनुसार सब चीजों की तरह जीवन में प्रेम की गति भी द्वन्द्वात्मक है। प्रेम जीवन की सफलता और सहायता के लिए है। यदि प्रेम बिल्कुल छिछला या शिथला रहे तो वह असंयत वासना मात्र बन जाता है और यदि जीवन में प्रेम या आकर्षण का विवेक से संयम न हो तो वह जीवन के लिए घातक भी हो सकता है।

प्रेम–सम्बन्धों में संयम के महत्व को यशपाल अस्वीकार करते हैं। तरसना ही क्या प्यार है? प्यार क्या संतोष नहीं चाहता? रक्त–मांस का उन्मेष ही सही, पर हृदय और क्या है, मस्तिष्क और क्या है? शरीर को काट हृदय की परीक्षा करने से तो हृदय में प्यार या मस्तिष्क में विचार रखे हुए नहीं मिलते। प्यार और विचार शरीर के व्यवहार मात्र हैं। इस प्रकार संयम की धारणा भी शारीरिक क्रिया–कलाप ही है।

यशपाल, मुक्त–प्रेम या मुक्त–भाग को भी प्रायः समर्थन देते हुए प्रतीत होते हैं। प्यार का लक्ष्य मात्र प्यार ही होना चाहिए न कि सन्तोनोपत्ति अथवा किसी सामाजिक दायित्व की पूर्ति –''भय और मजबूरी से शरीर दिया जा सकता है, प्रेम नहीं। प्रेम आकर्षण की सच्चाई और उसके स्वतः और स्वतन्त्र होने में है।''[5] मुक्त भोग का अर्थ अराजकता अथवा सच्चाई अथवा मनमानी नहीं बल्कि स्वेच्छा से अपने मन की प्रकृति के अनुसार प्रेम अथवा काम सम्बन्ध स्थापित करना है। भास्क के अनुसार, ''कैसे कोई किसी के बिस्तर में घुस जाएगा या घुसने देगा... यह तो पारस्परिक गहरे, अदम्य आकर्षण से हो सकता है।''[6]

खूब बचे कहानी में साधना प्रेम के बारे में अपने विचार प्रकट करती हुई कहती है, ''नर नारी में स्वाभाविक आकर्षण तथा प्रेम के संबंध में सामाजिक तथा वैयक्तिक नैतिकता के दृष्टिकोण से बौद्धिक स्तर पर निधड़क और रोमांचक बातचीत! मानव जीवन में प्रेम–प्रणय और यौवन प्रवृत्ति की स्वाभाविकता तथा अवसर की चर्चा... इच्छाओं और विचारों की अभिव्यक्ति और निष्पत्ति का साधन शरीर ही है। शरीर या इन्द्रिय माध्यम के बिना मन–मस्तिष्क के झुकाव की क्या सम्भावना। इच्छाओं, भावनाओं के अपूर्ण असफल और कुंठित रहने पर केवल यंत्रणा का कारण होना।''[7] कहानी का अन्य पात्र कुमार प्रेम की सरल परिभाषा करता हुआ कहता है – ''नर–नारी में प्रेम और आकर्षण का अर्थ मन और तन के परस्पर ऐक्य और मेल की चाह और प्रवृत्ति है। पूर्ण शारीरिक एक्य ही प्रेम–आकर्षण की निष्पत्ति है। अन्तर रहने से प्रेम भावना की पूर्ति अथवा निष्पत्ति सम्भव नहीं। अन्तर और एक्य या प्रेम एक दूसरे का इन्कार है।''[8]

स्त्री–पुरुष के बीच प्रेम–सम्बन्धों में रूचि की अनुकूलता का भी महत्व कम नहीं। परस्पर पसन्द आ जाना ही रूचि की अनुकूलता है। परस्पर पसन्द आ जाने से एक–दूसरे के प्रति कृपाभाव का उद्रेक ही प्रेम है।''[9]

प्रेम रहित काम–सम्बन्धों को यशपाल सबसे घटिया मानते हैं। ''प्यार के संतोष के लिए शरीरों का ही नहीं, मन का भी मेल चाहिए।''[10]

स्त्री–पुरुष सम्बन्धों में वेश्यावृत्ति का विरोध यशपाल ने सर्वत्र किया है। अनिच्छापूर्वक किया गया काम–व्यापार, जिसका लक्ष्य पारस्परिक सुख–सन्तोष न होकर कुछ और होता है, यशपाल की नजरों में व्यभिचार और वेश्यावृत्ति है।

यशपाल की प्रेम सम्बन्धी धारणा भौतिकवादी है। प्रेम का जन्म इन्द्रियों के माध्यम से होता है। प्रेम का लक्ष्य पारस्परिक संतोष है ना कि आत्मोत्सर्ग अथवा आत्मोन्नति प्रेम और काम–वासना का गहरा सम्बन्ध है। प्रेम के बिना काम–सम्बन्ध मात्र मशीनी है और निरर्थक भी।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

**विवाह पूर्व एवं विवाहेत्तर प्रेम–सबन्ध :**यशपाल के कहानी साहित्य में विवाहपूर्व अथवा विवाहेत्तर प्यार को निषिद्ध ही माना गया है। प्रेम एक स्वाभाविक संतोष–कामना है और उसे काम सुख से अलग–अलग नहीं किया जा सकता।

साहित्यकार की सोच उसके व्यक्तित्व और विचारधारा के अनुकूल ही होती है। उसकी अनुभूतियों का स्रोत एक–दो दिन में नहीं बनता, प्रत्युत उसकी सृष्टि मनुष्य के किशोरवय में ही हो जाती है, जब से वह जीवन और जगत् को समझने की कोशिश करने लगता है। यशपाल की 'प्रायश्चित, ज्ञानदान, धर्मरक्षा, फूलों का कुर्ता, उत्तमी की माँ, समाज सेवा आदि कहानियों में यौन भावना तथा प्रेम का चित्रण किया है जिन पर आर्य समाजी का प्रभाव है जो किशोरों की यौन भावनाओं को दबाकर उन्हें कुंठित कर देते हैं। लेकिन यह यौन–भावना एक–दूसरे के प्रति आकर्षित होना किसी को पसन्द करना और फिर प्रेम करने लग जाना इस पर कोई नियम अपना पहरा नहीं दे सकता। ये मनुष्य में जब आते हैं तो स्वयं मनुष्य को भी ये नहीं पता चलता यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया है जो प्रकृति का आनंद है जिससे यह सृष्टि चलती है चाहे इस पर समाज द्वारा धर्म द्वारा लाख बंधन लगाए जाए लेकिन यह रुकता नहीं।

'प्रायश्चित' कहानी में जिस कन्या को पिता ने ब्रह्मचर्य और सदाचार पर चलाने के लिए क्या नहीं किया। पाँच वर्ष की अवस्था में वेद मन्त्र कंठस्थ कराए, नीति और सदाचार के श्लोक रटाए, दोनों समय अपने पास बैठाकर अग्नि में आहुति डलवाई, बचपन में मोटे–सादे वस्त्र पहनाए, सिर के बाल कटवा दिए, पैरां में जूते या चप्पल नहीं पहनने दिए, छः वर्ष की अवस्था में कन्या कुरुकुल में प्रवृष्टि कराया। इतने कठोर अनुशासन के बावजूद साढ़े चौदह वर्ष की अवस्था में वासना से प्रभावित हो पाप लिप्त हो गई तथा अन्त में अपनी जीवन–लीला को समाप्त कर अपने पाप का प्रायश्चित किया। किन्तु इसे पाप नहीं कहा जा सकता यह तो एक प्राकृतिक क्रिया है जिसे हम प्रेम कहते हैं अगर यह न हो तो संसार न हो किन्तु इस कठोरता से दबाने से यह और अधिक उत्पन्न होती है और व्यक्ति इसे कब तक दबाए। कहानी की पात्र सत्य का उद्घाटन करते हुए कहती है – 'गुरुकुल के ब्रह्मचर्य आश्रम में रहते हुए ही मेरे मन में विलसिता की भावना उमड़ चुकी थी परन्तु अधिष्ठात्रियों के मुख से सदुपदेश सुनकर मैं उसका दमन करती रही।''[11]

इसी प्रकार 'धर्मरक्षा' कहानी में ज्ञानवती का पिता उसे कठोर अनुशासन में रखता है ताकि वहवासना की ओर अग्रसर न हो किन्तु परिस्थितिवश वह वासना की ओर उन्मुख हो जाती है जब उसका नौकर उसे बताता है कि ये कोई बुरी चीज नहीं है यह तो भगवान को भी मान्य है और उन्होंने भी इसका पालन किया है – ''ज्ञानवती नहीं यह तो बुरा काम है'' मोतीराम – ''एक बार देखो तो! बुरा क्या है ? यह तो श्री रामचन्द्र जी, सीता जी और श्री कृष्ण जी भी करते थे।''[12] और ज्ञानवती सब संबंध तोड़कर मोतीराम की हो जाती है। उसके पिता ने इतने सालों से जो नियम, अनुशासन, ज्ञान उस पर थोप रखा था वह कुछ काम नहीं आता।

'उत्तमी की माँ' कहानी में अनावश्यक वर्जनाओं और कुंठाओं का विरोध किया है। उत्तमी अपने को हमेशा हीन समझती थी क्योंकि उसे चेचक हो गया था किन्तु बाद में वह सुंदर हो गयी थी। चेचक के कारण उसकी शादी नहीं हो रही थी लेकिन प्रेम भावनाएं तो हर किसी में होती हैं। उनके घर शिवराम नाम का लड़का जो घर पर किराए पर रहता था उत्तमी के साथ संबंध बना लेता है। दोनों एक–दूसरे को प्यार करने लगते हैं। उत्तमी उसके प्यार में खो जाती थी और उसे इसमें कोई बुराई नहीं लगती थी। ''इसके बाद शिवराम और उत्तमी दूसरों से निगाहें बचा कर अपना खेल खेलते रहे। ज्यों–ज्यों उत्तमी को प्यार का रस आता गया, वह दिलेर होती गयी।''[13] परन्तु बिशन जोकि उत्तमी का भाई है उसे सब पता चल जाता है

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

और वह शिवराम को घर से निकाल देता है। उत्तमी की माँ गरीब थी इसलिए कोई न कोई किराएदार तो रखना ही पड़ता था। शिवराम के बाद सालिगराम को किराए पर रखा गया। वैसे तो वह उत्तमी को बेटी कहकर ही बुलाता था किन्तु उत्तमी को पढ़ाते–पढ़ाते वह उसे वासना की नजरों से देखने लगता है। उत्तमी को भी इससे कोई परहेज नहीं था क्योंकि वह आत्मिक संतुष्टि चाहती थी। ''उत्तमी को चाशनी का स्वाद लग चुका था उसके अभाव में वह पुराने गुड़ से ही संतोष कर लेती थी।''[14] किन्तु यहां भी उसका प्रेम नहीं चल सका और इसके बाद उत्तमी को उसके मामा के घर फिरोजपुर भेजा गया। यहां भी उसका मामा उसके रूप को देखकर उस पर मोहित हो जाता है। उत्तमी तो जैसे प्यासी थी ही वह अपने को रोक नहीं पाती, ''उत्तमी की आँखों में ऐसी प्यास और उसके यौवन के उफान में कुछ ऐसा आकर्षण था कि नौजवानों क्या अधेड़ों के लिए भी उसकी उपेक्षा कठिन हो जाती थी। उसकी प्रवृति भी खालिस घी सी हो गयी थी कि पुरुष के सामीप्य की उष्णता पाते ही उसे पिघलने से बचाया नहीं जा सकता था।''[15] फिर एक दिन मामी उत्तमी को लेकर लाहौर आ गयी और ननद की 'सुलक्षणी बेटी' की बाबत कुछ बक–बक कर उसे छोड़ गयी। इस पर उत्तमी की माँ ने रो–रोकर अना माथा ठोंका और उत्तमी को गालियां दी – ''तुझे अपने गले में बांधकर मैं किस कुएं में जा मरूं? मालूम होता कि तू ऐसी चुड़ैल निकलेगी तो अपनी कोख फाड़कर तुझे मार डालती और मर जाती...।''[16] इसके बाद उत्तमी पर पहरे लगा दिए गए उसे घर की चारदीवारी में रखा जाने लगा। इसका परिणाम यह हुआ कि वह संसार से विरक्त हो गई और संयासनी (भक्तिन) बन जाती है और अंत में मर जाती है। यहाँ उत्तमी का कसूर सिर्फ इतना था कि वह अपनी प्रेम भावना पर नियंत्रण न रख सकी जिसका भुगतान उसे अपनी मौत से ही चुकाना पड़ता है।

मानवीय भूमि पर प्रकृति स्त्री–पुरुष में ऐसे प्रेमयुक्त काम–सम्बन्ध की मांग करती है। मानवेत्तर जीवों में 'काम' का 'प्रेम' लुप्त या अविकसित रहता है। पर मनुष्य में प्रकृति इसी पक्ष का संवर्धन चाहती है। वह सृष्टि की आदिशक्ति 'रति' (सेक्स) की 'प्रीति' में अभिव्यक्ति और निखार चाहती है।''[17]

इसी प्रकार 'समाज–सेवा' कहानी की उषा मेहता आजीवन कुंवारी रहकर ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए समाज–सेवा के लिएए प्रतिबद्ध है। बाद में विलासिता में फंसकर जीवन के स्वाभाविक मार्ग की ओर मुड़कर प्रमोदनाथ से प्रेम–विवाह कर लेती है। इस प्रकार संयम नियम और व्रत जनित सामाजिक प्रतिरोधों के घातक परिणामों को कई कहानियों में आधार बनाया है। अंत में पात्र स्वाभाविक जीवन की ओर मुड़ते दिखाई देते हैं। प्राकृतिक अवरोध से अन्ततः विस्फोट होता है या कुंठा में परिवर्तित हो जाता है।

'जीत की हार' कहानी में भी नाजो शादी से पूर्व तिलोक सिंह से संबंध बनाती है और अपने प्रेम को वफादारी से निभाती है। लेकिन तिलोक सिंह उससे बेवफाई करता है। नाजो तिलोक सिंह को अपना पति मानकर उसे अपना सब कछ अर्पण कर देती है, नाजो गर्भवत हो जाती है किन्तु तिलोक सिंह नाजो से अपना संबंध तोड़ लेता है और नाजो की शादी किसी और से हो जाती है लेकिन उसकी गोद में बेटा तिलोक सिंह का होता है नाजो गर्भपात नहीं करवाती वह न तो तिलोक सिंह के साथ अपने संबंध को अवैध मानती है और न ही इस संबंध के परिणामस्वरूप जन्म लेने वाले बच्चे को। यहां नाजो का प्रेम पवित्र और महान है उसका तिलोक से संबंध शादी से पूर्व था लेकिन फिर भी वह अपने बच्चे को जन्म देती है। ''तिलकसिंह की नज भी उस ओर गयी। नाजू ने गोद के बच्चे को उसे दिखाकर चूम लिया और मुस्करा दी।''[18]

'आबरू' कहानी में शिव और शांति प्रेम के वशीभूत होकर एक–दूसरे में खो जाते हैं। उन्हें यह एहसास नहीं होता कि अभी वे विवाह के बंधन में बंधे नहीं हैं वे तो केवल प्रेम ही देखते हैं। एक दिन

अपनी समझ–बूझ प्रेम के ज्वार में डूबोकर वह शांति को अपने कमरे में ले गया। वे दोनों सभी कुछ भूल गए थे तो घड़ी का ही ध्यान उन्हें कैसे बना रहता। आधी रात बीत जाने पर उन्हें होश आया।''[19] शिव के पिता शिव और शांति के रिश्ते के खिलाफ थे। इसलिए शिव अलग कमरा लेकर रहने लगा था। शिव ने शांति को बहुत समझाया कि तुम घबराओ मत हम दोनों शादी कर लेंगे और एक साथ रहेंगे। लेकिन शांति को कुछ समझ नहीं आया। उसकी सोचने की शक्ति खत्म हो गई और उसने बदनामी तथा समाज के डर से आत्महत्या कर ली। शिव ने भी अभी शादी नहीं की। इस प्रकार समाज के डर से दो जिन्दगियां बर्बाद हो गई क्योंकि समाज प्रेम के रिश्ते को स्वीकार नहीं करता।

इसी प्रकार 'ज्ञानदान' कहानी में ऋषि पुत्री सिद्धी शारीरिक वासनाओं को आत्मा का शत्रु मान कर उनका दमन करती है। तरुण तपस्वी नीड़क जो वासना को जीवन का शत्रु मानता है, वहीं प्रवचन के समय सिद्धि पर दृष्टि पड़ते ही नीड़क का ताप और त्याग खण्डित होने लगता है। नीड़क, जो वासना को जीवन का विनाशकारी शत्रु मानता था, अब सहसा उसे जीवन के लिए अनिवार्य रूप में स्वीकार करता है। ''ब्रह्मचारी ने कुछ हतोत्साहत होकर उत्तर दिया – ''ज्ञान! .... ज्ञान चेतना का विकास है। ... चेतना का द्वार इन्द्रियां हैं। ... प्रकृति स्वयं उन्हें मार्ग दिखाती है। ब्रह्मचारिणी प्रवृत्ति का हनन और दमन अज्ञान है।''[20] और अंत में चील के जोड़े को पृष्ठभूमि में ब्रह्मचारी नीड़क सिद्धि के सामीप्य में वासना को प्रकृति देने के रूप में अपना लेता है।

यशपाल वासना को घिनौना नहीं मानते थे इसे जिन्दगी की जरूरत कहते हैं लेकिन यह स्त्री से जबरदस्ती नहीं बल्कि उसके प्रेम और उसकी स्वीकृति से सम्भव है। नीड़क सिद्धि की स्वीकृति से ही उसका प्रेम पाता है और कहता है ''सच कहो, अनेक वर्ष समाधि द्वारा परम सुख में तल्लीन होने और आत्म–विस्मृति में संसार को भूल जाने की चेष्टा करके भी क्या कभी तुम तृप्ति में इतनी आत्म–विस्मृत हो सकी थी जितनी इस सम्पूर्ण रात्रि में।''[21]

यशपाल की कहानियों में विवाहपूर्व प्रेम–सम्बन्धों में कहीं भी अनैतिकता नहीं हैं। इनकी नायिका जिससे भी प्रेम करती है, उसके प्रति समर्पित है। वह किसी प्रलोभन, दबाव अथवा स्वार्थपूर्ति के लिए प्रेम अथवा यौन–सम्बन्ध स्थापित नहीं करती और न ही पारस्परिक सुख से बढकर इनका कोई उद्देश्य मानती है।

अधिकांशतः यशपाल पर स्वच्छन्दवादी प्रेम के समर्थक का आरोप लगाया जाता हैं समाजवाद नर–नारी सम्बन्धों को एक प्राकृतिक आवश्यकता और कर्तव्य का सम्बन्ध स्वीकार करता है। इसलिए इन दोनों में किसी को भी एक–दूसरे का दास बन जाना आवश्यक नहीं। नारी को दास सा साधन बनाकर पुरुष वर्चस्व को बनाए रखना, यशपाल को मान्य नहीं। दोनों में समता का भाव हो कोई हीन नहीं है, दोनों के मध्य पारस्परिक स्नेह एवं अनुराग का होना आवश्यक है। जहाँ प्रेम का आकर्षण काम प्रेरित होता है वहाँ तृप्ति हो जाने के बाद आकर्षण नहीं रहता। ऐसी स्थिति में प्रेम की जाय काम–भूख की प्रधानता रहती है। प्रेम सहित काम सम्बन्ध में प्रधानता प्रेम की रहती है और काम दृष्टि उसकी एक अवस्था विशेष होती है। स्त्री–पुरुष में यदि परस्पर प्रेम भाव उत्कट एवं प्रधान रहता है तो काम–परक ताल–मेल अपने आप बैठ जाया करता है। प्रेम–सहित काम में काम तृप्ति का भाव उत्कट होता है। पर, प्रेम सहित होने के कारण स्त्री–पुरुष के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को तृप्त करके सह–जीवन को सुखकर बनाए रखता है। ऐसा सम्बन्ध प्रायः यौवन के आरम्भ में प्रकृति के अनुसार होता है। इन सम्बन्धों में प्रेम और काम का द्वैत अनुभूत नहीं होता

और उन्हें स्वस्थ एवं आवश्यक मानवीय स्त्री पुरुष सम्बन्ध माना जाता है। यशपाल की दृष्टि में प्रेम स्वतन्त्र वस्तु है। काम नैसर्गिक भावना है। इसका दमन नहीं करना चाहिए।

'अपनी चीज' स्वतन्त्रता और समता पर टिका मैत्रीमय प्रेम ही दाम्पत्य का आधार है। विषमतामय वैवाहिक बन्धन में उसका अभाव होता है। सामान्यतः समाज में विवाह को स्त्री परपुरुष के अधिकार के प्रमाण पत्र के रूप में रखा जाता है। विवाह से पूर्व स्त्री 'पराई चीज होती है', किन्तु विवाह के बाद वह 'अपनी चीज' बन जाती है। 'अपनी चीज' कहानी में आलो विवाह के कारण 'किसी की वस्तु' होने के अधिकार से मुक्त नहीं है। मेजर चौहान अपनी पत्नी को अपनी चीज समझकर उसे खिलौने से अधिक नहीं समझता। वह अपनी सोच के अनुसार पत्नी के व्यक्तित्व में काट–छांट करने का प्रयत्न करता है। इन दोनों के बीच एक तीसरा व्यक्ति कर्नल कौशिक के आने से प्रेम का त्रिकोण बन जाता है। कर्नल आलो को वस्तु नहीं समझता वह उसका सम्मान करता है। उसकी भावनाओं की कद्र करता है। उसका ख्याल रखता है। आलो को मेजर से यह सब कुछ प्राप्त नहीं हुआ था। कर्नल ने आलो को वह प्यार दिया जो मेजर नहीं दे सकता। आलो कर्नल से कहती है – ''मैं कितनी दुष्ट हूँ। तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकती।... मैं केवल तुम्हें संतुष्ट देखना चाहती हूँ। इसक लिए मुझे सब कुछ स्वीकार है।.... आलो के केशों को सहलाते हुए कर्नल ने अस्फुट शब्दों में उत्तर दिया – ''मेरे संतोष के लिए इतना बड़ा मूल्य।... समझ लो मैंने सब कुछ पा लिया।''[22]

मेजर को आलो और कर्नल के बारे में सब पता होता है और वह इसे अपना अपमान समझता है। अपने अपमान का बदला लेने के लिए वह कर्नल को विष का इंजेक्शन लगा देता है। कर्नल को इसका अहसास कराना चाहता है – ''कर्नल कुछ ही सैकिण्ड में तुम नहीं रहोगे...। कर्नल स्थिति को समझकर रिवाल्वर निकालकर लड़बड़ाते शब्दों में कहता है – ''कायर, दगाबाज, मैं आलो को तुझ से अधिक विश्वास से प्यार करता था... उसे विधवा न करूँगा। तू उसके योग्य नहीं है। बाँध कर भी तू उसे रख न सकेगा।''[23] इस प्रकार यहाँ हमें आलो के विवाह के बाद प्रेम अनैतिक नहीं लगता वह सच्चा प्यार करती है।

'उत्तराधिकारी' कहानी में हरसिंह का विवाह पहाड़िन लड़की मानोसे होता है। हरसिंह सेना में होता है। वह ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा के लिए महायुद्ध में लड़ते हुए बुरी तरह जख्मी हो जाता है। हरसिंह पूरे साढ़े चार बरस बाद गांव लौटता है तो देखता है, उसका बूढ़ा बाप नहीं रहता, घर में उसकी माँ, बहू और उसका लड़का मौजूद होता है। अपनी अनुपस्थिति में हो गया लड़का देख हरसिंह क्रोध से झल्ला उठा। हरसिंह की माँ ने माथे पर हाथ मार कर कहा, ''... तो मैं क्या करती? ... मैं ही जानती हूँ जैसे मैंने इस चुड़ैल को नथिया कर रोके रख। अब वह सब जाने दे! तू भी तो ऐसे वक्त चला गया...। उसकी जवानी का अंधड़ था। कौन नहीं जानता बरसात की पहली आँधी में पेड़ गिरा ही करते हैं। अब ढंग से निभा। लड़का है तो जवान भी होगा। अब तेरा ही है...।''[24] यहां हरसिंह की माँ भी इस बात को स्वीकार करती है कि यौवन अवस्था ऐसी ही होती है। इसमें किसी का दोष नहीं अगर हवासिंह चार साल तक न जाता तो मानो किसी ओर से संबंध न बनाती। उसकी भी कुछ इच्छाएं और भावनाएं हैं। अगर वह हरसिंह का इंतजार करती तो बूढ़ी हो जाती। जैसे 'प्रेम का सार' कहानी की 'रफिया' जीवन के तीस साल तक पति की प्रतीक्षा करके अपने यौवन को होम कर देती है। तीस वर्षों बाद अपनी पति फज्जा के सफेद बाल, झुर्रियों से भरा चेहरा, निस्तेज आँखें और दांतों से विहीन मुख को देखकर अपनी साधना की निरर्थकता का बोध होता है। और वह पछताती है ''उस समय कुछ कहने का अवसर न था, परन्तु ख्याल आया – यह है तीस बरस की प्रेम साधना का सार।''[25]

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

'ओ भैरवी' कहानी में बुद्ध काल के परिपार्श्व में चित्रित सेक्स समस्या का चित्रण है। बौद्ध धर्म में भिक्षु बनने के लिए नारी–विमुख होना आवश्यक माना जाता था। इस तथ्य को लेकर कहानी की रचना की गई है। लेकिन 'रति' जीवन में एक व्यापक भाव है जिसे नकारा नहीं जा सकता है। कहानी की नायिका भैरवी सिद्ध जीमूत की पत्नी में रूप में है। जीमूत उसे अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपने पास रखते हैं लेकिन उसकी आवश्यकताओं का कोई ख्याल नहीं करते। जबकि माहुल नामक कलाकार भैरवी की ओर आकर्षित है। वह उसे सुन्दरता की देवी मानता है। एक दिन भैरवी के हाथों से जीमूत की मूर्ति जो देवी तारा की होती है टूट जाती है। भैरवी माहुल से यह मूर्ति बनवाना चाहती है परन्तु माहुल के भैरवी तारा से कहीं अधिक सुन्दर लगती है, उसे आकर्षित करती है। वह कहता है – ''सिद्धयदि सत्य के उपासक हैं तो वह इसी से अधिक सन्तुष्ट होंगे।... वह सत्य को लौकिक जीवन में देखता है। अन्ततः निश्चय करता है – ''देवी सत्य को इतना प्रत्यक्ष पाकर अब मैं मिथ्या की उपासना नहीं करूँगा। ...मेरे सम्मुख उपस्थित तुम तारा की इस मूर्ति से कहीं अधिक सुन्दर हो।''[26]

प्रेम और काम वासना जीवन की ऐसी सहज प्रवृत्तियाँ हैं जिनकी अतृप्ति जीवन में कुण्ठा, निराशा, विसंगति को जन्म देती है। अतृप्त इच्छाएं तृप्ति की कामना में नैतिक अनैतिक का बंधन तोड़ देती है। भैरवी भी इसी काम–विकृति का शिकार है। माहुल के सम्पर्क में आते ही उसका दमित काम अभिव्यक्ति के मार्ग खोजने लगता है। भैरवी क्षुब्ध स्वर में माहुल को कहती है –''यातना नहीं तो क्या? सिद्ध मुझे अनेक घड़ी तक अपने सामने निराकरण खड़ी रहने का आदेश देकर इस प्रकार देखते रहते हैं मानों मैं जड़ काठ का कुंदा हूँ। वे मेरी लज्जा का अपमान कर मुझे मिट्टी कर देते हैं। वे मेरे अंगों का स्पर्श और मर्दन कर मेरी अनुभूतियों का कोई प्रभाव अपने शरीर पर नहीं होने देते। वे स्वयं अनासक्त रहकर मुझे भोग का सामान बनाते हैं। इसे वे अनासक्त कर्म सिद्धि कहते हैं।... भिक्षु यदि अनासक रहकर भोग लेना तप है तो क्या विरक्ति अनुभव करके भी भोग को सह लेना, उससे भी बड़ा तप नहीं है? यह क्या इच्छा और कामना का, भोग की कामना न करने से भी बड़ा निरोध नहीं है? मैं क्या सिद्ध से अधिक कठिन तप नहीं कर रही हूँ?''[27] सिद्ध अपनी वासनाओं को अथवा काम इच्छा को भैरवी से शांत कर लेता है। किन्तु वो भैरवी को उस सुख का अनुभव नहीं लेने देता। दमित वासना में विस्फोट का होना बड़ा ही घातक होता है। ''... कलाकार क्या मेरा शरीर और सौन्दर्य मिट्टी में मिला देने के लिए ही है? क्य मेरी इच्छा का कोई मूल्य नहीं है?''[28] परिणामस्वरूप माहूल और भैरवी एक–दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं और भाग जाते हैं।

'जहाँ हसद नहीं' कहानी में प्रेम त्रिकोण है। सआदत और नूरहसन पति–पत्नी हैं। दोनों एक खुशहाल जिंदगी व्यतीत करते हैं लेकिन उनकी जिंदगी में उस वक्त तूफान आ जाता है जब नूरहसन को चोट लगती है और उसे अस्पताल में भर्ती होना पड़ता है। उसकी गैरहाजिरी में सआदत की जिंदगी में हबीब आता है। दोनों एक–दूसरे को बहुत प्रेम करते हैं। नूरहसन को इस बात का पता चल जाता है तो वह हबीब को घर नहीं आने देता। सआदत नूरहसन के सामने हबीब के साथ अपने प्रेम को स्वीकार करती है और अगले जन्म में उसी की होने के लिए नूरहसन के हाथों मर जाती है। ''प्यारे, आओ मिल लो। उसने स्वयं हबीब के गले में बाहें डालकर कहा, ''घबराओ नहीं, फिर मिलेंगे, हम जाते हैं।'' ... हबीब के सिर को सीने पर ले उसने प्यार किया, चूमा और फिर कहा, ''बस सलाम।''[29] यहाँ सआदत को हबीब के साथ अपने संबंध में कोई बुराई नजर नहीं आती बल्कि वह अपने पति के सामने निडरता से इस संबंध को स्वीकार करती है और अगले जन्म में हबीब की होने के लिए नूरहसन के हाथों मरना स्वीकार करती है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि विवाहपूर्व प्रेम–सम्बन्धों के विषय में यशपाल का दृष्टिकोण अत्यन्त उदार एवं मनोवैज्ञानिक है। प्रेम का लक्ष्य केवल सामाजिक नैतिकता को घुटने टेक कर स्वीकार कर लेना ही नहीं है बल्कि प्रेमियों के पारस्परिक सुख एवं संतोष में है। विवाहपूर्व प्रेम तथा काम संबंधों का एक मानवीय पहलू भी है जिसे अनदेखा नहीं किया जा सकता।

यशपाल की कहानियों में अनेक नायिकायें विवाह पूर्व प्रेम–सम्बन्ध स्थापित करती हैं और समाज की रूढ़िवादी नैतिकता का मजाक उड़ाती हैं।

यशपाल कहते हैं – ''प्रेम सृष्टि की परिचालक शक्ति है। वह जीवन की गति है और प्रेरणा है। लोगों के विवाह और गृहस्थी की संकुचित सीमाओं से घिरे जीवन की ओर संकेत करके वह विरक्ति से कहते हैं – प्रेम गतिमान और निर्बाध भावना है। उस पर सीमा और बन्धन लगाना, उसे निस्सत्त्व और निर्बल कर देना है। प्रेम जीवन के उपवन की मलय पवन है। विवाह की चारदीवारी खड़ी करके प्रेम पर रूकावटें लगाना उसे निस्सार कर देना है, उन्मुक्त जल–प्रवाह को पोखर में बन्द कर कान्तिहीन कर देना है।... प्रेम की शक्ति जीवन में तृप्ति की चाह है और कामना उसका रूप है।''[30]

यशपाल ने कुल मिलाकर दो सौ से अधिक कहानियाँ लिखी हैं। इन कहानियों में प्रेम–विषयक कहानियों की संख्या सबसे अधिक है। यशपाल ने देह की माँग को अस्वीकार नहीं किया। वर्जना या कुंठा के पीछे कार्यरत संस्कारों की पहचान यशपाल के यहाँ बहुत स्पष्ट है। धर्म जैसी संस्थाएं इस समस्या को केवल पाखण्ड में बदल सकती हैं, उनका हल नहीं ढूँढ सकतीं।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि यशपाल की कहानियों में विवाहपूर्व एवं विवाहेत्तर प्रेम–प्रसंगों की बहुतायत है। ऐसा प्रतीत होता है कि यशपाल युवक–युवतियों के बीच प्रेम संबंधों को अत्यन्त सहज एवं स्वाभाविक मानते हैं। यशपाल ऐसे प्रसंग में रूढिवादी नैतिकता को स्वीकार नहीं करते। इसलिए नैतिकता का मापदण्ड ऐसे संबंधों की सहजता एवं स्वतन्त्रता है। विवाहपूर्व काम–सम्बन्धों को भी यशपाल हेय नहीं समझते। वास्तव में यशपाल के विचार अपने समाज का यथार्थ रूप ही प्रस्तुत नहीं करते बल्कि समाज के भविष्य की ओर भी संकेत करते हैं।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

1. यशपाल, सम्पूर्ण कहानियां, खण्ड–1, बदनाम, पृ. 282
2. वही, पृ. 282
3. वही, नमक हलाल, पृ. 383
4. वही, पृ. 389
5. वही, क्यों फंसे, पृ. 83
6. वही
7. यशपाल, सम्पूर्ण कहानियां, खण्ड–4, खूब फंसे, पृ. 252
8. वही, पृ. 252
9. वही, क्यों फंसे, पृ. 73
10. वही, पृ. 72
11. यशपाल, सम्पूर्ण कहानियां, खण्ड–1, प्रायश्चित, पृ. 78
12. यशपाल, सम्पूर्ण कहानियां, खण्ड–2, धर्मरक्षा, पृ. 70

13. यशपाल, सम्पूर्ण कहानियां, खण्ड–3, उत्तमी की माँ, पृ. 6
14. वही, पृ. 7
15. वही, पृ. 8
16. वही, पृ. 7
17. डॉ. मधुलिका पाठक, यशपाल के कथा साहित्य में काम प्रेम और, पृ. 132
18. यशपाल, सम्पूर्ण कहानियां, खण्ड–3, जीत की हार, पृ. 335
19. यशपाल, सम्पूर्ण कहानियां, खण्ड–2, आबरू, पृ. 451
20. यशपाल, सम्पूर्ण कहानियां, खण्ड–1, ज्ञानदान, पृ. 212
21. वही, पृ. 213
22. वही, अपनी चीज, पृ. 291
23. वही, पृ. 302
24. यशपाल, सम्पूर्ण कहानियां, खण्ड–3, उत्तराधिकारी, पृ. 25
25. यशपाल, सम्पूर्ण कहानियां, खण्ड–1, प्रेम का सार, पृ. 38
26. यशपाल, सम्पूर्ण कहानियां, खण्ड–3, औ भैरवी, पृ. 94
27. वही, पृ. 95
28. वही, पृ. 94
29. यशपाल, सम्पूर्ण कहानियां, खण्ड–1, जहाँ हसद नहीं, पृ. 175
30. यशपाल, सम्पूर्ण कहानियां, खण्ड–1, बदनाम, पृ. 28